The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 2 | Issue 6 | June 2024
ISSN: 2583-973X (Online)
Website: www.theacademic.in

भारतीय शिक्षा प्रणाली का बदलता स्वरूप: प्राचीन शिक्षा से लेकर वर्तमान शिक्षा तक

ज्योत्सना

Assistant Professor,MBPG College B.Ed. Department,
Haldwani (Nainital) Uttarakhand, PIN- 263126
jyotshna0185@gmail.com

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Keywords: *शिक्षा ,प्राचीन शिक्षा प्रणाली, आधुनिक शिक्षा प्रणाली*

ABSTRACT

प्राचीन काल से आधुनिक काल तक अपने विकास के कारण, भारतीय शिक्षा प्रणाली अन्य देशों की शिक्षा प्रणाली से बहुत अधिक लोकप्रिय और विविध है। भारत में प्राचीन काल से ही शिक्षण और सीखने की एक समृद्ध परंपरा रही है। शिक्षा तार्किक सोच विकसित करती है, जो भविष्य की पीढ़ि'यों को बदलते वातावरण के साथ तालमेल बिठाने में मदद करती है। शिक्षा, सिखाना और सीखना है, जिसका विकास मानव संघर्ष और ज्ञान प्राप्ति से हुआ है। यह दो तरह का हो सकता है-: औपचारिक और अनौपचारिक | शिक्षा मानव समाज और संस्कृति का विकास है, जो आज का आधुनिक समाज बनाता है। शिक्षा समाज, संस्कृति, देश और समय के साथ बदलती रही है। पुराने समय में घरों, मंदिरों, पाठशालाओं और गुरुकुलों में मौखिक शिक्षा दी जाती थी, जो विद्यार्थियों को ज्ञान और कौशल प्रदान करके उन्हें भविष्य में जीने के लिए तैयार करती थी वहीं वर्तमान शिक्षा प्रणाली व्यक्तियों को शिक्षित करने के लिये संस्थानों और प्रथाओं को संदर्भित करती है, जिसमें विषयों, कौशलों और ज्ञान की एक विस्तृत श्रृंखला शामिल है। भारत के प्राचीन गुरुकुलों में व्यक्तिगत विकास और व्यक्तिगत शिक्षा पर जोर था, स्वतंत्रता के बाद भारतीय शिक्षा प्रणाली में निरंतर बदलाव हुए जो मौखिक शिक्षा से लेकर आधुनिक स्मार्ट कक्षाओं, ई-लर्निंग और AI तक

शिक्षा प्रणालियों में एक नई क्रांति लाया है। इस लेख का उद्देश्य है कि प्राचीन मौखिक शिक्षा से डिजिटल शिक्षा के माध्यम से वर्तमान संवैधानिक शिक्षा में कैसे बदलाव आया है पर चर्चा करना।

प्रस्तावना -: शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है जो आदिम काल से ही लोगों पर प्रभाव डालती आई है और लोगों ने अपने ही समाज और संस्कृति को विकसित किया है। जिसका परिणाम आज का आधुनिक समाज है। शिक्षा समाज, संस्कृति, देश और समय के साथ बदलती रही है। आज के समय में शिक्षा, विशेष रूप से स्कूल या इसी तरह के संस्थानों में, सिखाना और सीखना है। प्रारंभिक शैक्षिक प्रक्रियाओं में भोजन इकट्ठा करने, आश्रय प्रदान करने; हथियार और अन्य उपकरण बनाना; भाषा सीखना; और किसी विशेष संस्कृति के मूल्यों, व्यवहार और धार्मिक प्रथाओं को सीखना शामिल था। पढ़ने और लिखने के आविष्कार से पहले लोग जीवित रहने के लिए प्राकृतिक शक्तियों, जानवरों और अन्य मनुष्यों से लड़ते थे। अत: जीवित रहने हेतु उन्होने कौशलो को सांस्कृतिक और शैक्षिक रूप में विकसित किया। इस प्रकार कहा जा सकता है कि शिक्षा का विकास जीवित रहने और ज्ञान प्राप्त करने के लिए मानव संघर्ष से हुआ है। यह औपचारिक या अनौपचारिक हो सकती है। अनौपचारिक शिक्षा से तात्पर्य सामान्य सामाजिक प्रक्रिया से है जिसके द्वारा मनुष्य अपनी संस्कृति में कार्य करने के लिए आवश्यक ज्ञान और कौशल प्राप्त करता है। औपचारिक शिक्षा का अर्थ है वह प्रक्रिया जिसके द्वारा शिक्षक संस्थानों के भीतर विद्यार्थियों को पाठ्यक्रमों में मार्गदर्शन देते हैं। आज की शिक्षा व्यवस्था ऐसी हो गई है कि हम सिर्फ किसी स्कूल, कालेज या विश्वविध्यालय में जाकर विभिन्न विषयों की दस-बीस पुस्तकें पढ़ना ही शिक्षा का अर्थ समझते हैं। हमारे दृष्टिकोण में, जिस व्यक्ति ने निर्धारित पाठ्यक्रम के अनुसार जितनी अधिक पुस्तकें पढ़ी है और जितनी ऊँची परीक्षा पास की है, वह उतना ही अधिक शिक्षित और विद्वान है। आजकल लोगों का मानना है कि अक्षरों से परिचित और कई भाषाओं को पढ़ने और लिखने की क्षमता नहीं रखने वाले व्यक्ति को समाज में शिक्षित नहीं कहा जा सकता। किंतु प्राचीन भारतीय शिक्षा व्यवस्था ऐसी नहीं थी, जिसमें विद्यार्थियों को शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक शिक्षा दी जाती थी ताकि वे जीवन में किसी भी चुनौती का सामना कर सकें. आज की शिक्षा ऐसा करने में असमर्थ है.

प्राचीन शिक्षा और वर्त्तमान शिक्षा :

शिक्षा एक व्यापक प्रक्रिया है यह मानव जीवन में जन्म से लेकर मृत्यु तक निरंतर चलती रहती है। इसके द्वारा मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का विकास उसके ज्ञान एवम् कौशल में वृद्धि एवम व्यवहार में परिवर्तन किया जाता है। और उसे सभ्य, सुसंस्कृत एवम् योग्य नागरिक बनाया जाता है। शिक्षा शब्द की उत्पत्ति संस्कृत भाषा के शिक्ष धातु से हुई है जिसका सामान्य अर्थ सीखना होता है, अर्थात शिक्षा वह प्रक्रिया है जो ज्ञान की प्राप्ति का साधन है, जिस प्रकार साध्य की प्राप्ति साधन के बिना सम्भव नहीं है उसी प्रकार ज्ञान की प्राप्ति शिक्षा के बिना सम्भव नहीं हैं। इसे ही स्पष्ट करते हुए आचार्य दण्डी लिखते हैं कि, "यदि शिक्षा रूपि ज्योति इस संसार में नहीं होती तो चारों ओर अंधकार ही होता अर्थात् शिक्षा ज्ञान की वह ज्योति है जो मानव को ही नहिं सम्पूर्ण जगत को भी प्रकाशवान बनाती है|"

शिक्षा के प्राचीन काल से वर्त्तमान काल तक के सफ़र को विभिन्न दृष्टिकोणों से आसानी से समझा जा सकता है; प्राचीन शिक्षा वैज्ञानिक दुनिया के बजाय दार्शनिक दुनिया पर केंद्रित थी, वह मानव के सम्पूर्ण विकास का साधन थी, उसका उद्देश्य मात्र पुस्तकीय ज्ञान प्राप्त करना नहीं था, अपितु मनुष्य के स्वास्थ्य का भी विकास करना था | प्राचीन शिक्षा प्रणाली नैतिकता से परिपूर्ण थी | मनुस्मृति में कहा गया है की 'यदि मनुष्य सभी वेदों का ज्ञाता हो पर उसमें चारित्रिक गुणों का अभाव हो तो वह श्रेष्ठ नहीं हैं, किन्तु केवल गायत्री मन्त्र का ज्ञाता यदि चरित्रवान मनुष्य है तो वह सर्वश्रेष्ठ है'| जबकि आधुनिक शिक्षा में विज्ञान और प्रयोग को प्राथमिकता दी जाती है। आधुनिक शिक्षा, शिक्षा का वर्तमानिक रूप है जो मुख्य रूप से निर्णय लेने की क्षमता के साथ-साथ आलोचनात्मक सोच, मूल्य शिक्षा और विश्लेषणात्मक कौशल विकसित करने पर केंद्रित है। शिक्षा के सफ़र को स्थान, शिक्षण पद्धतियाँ, स्रोतों, शिक्षक, छात्र आदि मापदंडों के आधार पर संगठित किया जाए तो निम्न प्रकार प्राप्त होता है |

क्रम संख्या	**मापदंड**	**प्राचीन शिक्षा**	**आधुनिक शिक्षा**
1.	स्थान	धार्मिक स्थान (गुरुकुल)	औपचारिक भवन (स्कूल, कॉलेज)
2.	मुख्य फोकस	अंक ज्ञान, शब्द ज्ञान, आचार संहिता और दर्शन	विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, मानविकी, प्रौद्योगिकी कौशल

			युक्त शिक्षण
3.	शिक्षण विधियाँ	अध्ययन, मनन व स्मरण	प्रौद्योगिकी आधारित शिक्षण वार्ता, व्याख्यान विधि और व्यावहारिक अभ्यास जैसे निर्देशनात्मक प्रविधियां
4.	शिक्षक	धार्मिक विद्वान (वेद पुराणों के ज्ञाता)	प्रशिक्षित शिक्षक
5.	स्रोत	मनुस्मृति, वेद और पुराण जैसे महाकाव्य	डिजिटल लाइब्रेरी, इन्टरनेट , पुस्तकें आदि

प्राचीन शिक्षा का स्वरूप : प्राचीन शिक्षा को सामान्य शिक्षा या पारंपरिक शिक्षा जैसे अन्य नामों से भी जाना जाता हैं। अगली पीढ़ी के जीवित रहने के लिए आवश्यक नैतिकता, मूल्यों और सामाजिक कौशल का संचरण पारंपरिक शिक्षा के पीछे एक प्राथमिक प्रेरक शक्ति है। पारंपरिक शिक्षा के माध्यम से शिक्षार्थी उस समुदाय की परंपराओं और रीति-रिवाजों का ज्ञान प्राप्त करता था, जिसमें वे रहते थे। छात्रों को इस तरह की शिक्षा मुख्य रूप से मौखिक पुनरावृत्ति के माध्यम से दी जाती थी जिसे छात्र ध्यान पूर्वक सुन कर याद करते थे।

आधुनिक शिक्षा का स्वरूप: आधुनिक शिक्षा छात्र के उत्कृष्ट समग्र विकास पर जोर देती है। यह छात्रों की रुचियों और करियर की संभावनाओं के अनुसार कई स्ट्रीम प्रदान करती है, जैसे विज्ञान स्ट्रीम, वाणिज्य स्ट्रीम और मानवता स्ट्रीम। आधुनिक शिक्षा आलोचनात्मक सोच क्षमता और जीवन कौशल मूल्य शिक्षा विकसित करने पर भी जोर देती है और इसे ऑनलाइन और ऑफलाइन दोनों तरीकों से भी प्रदान किया जाता है। आधुनिक शिक्षा के स्रोत मोबाइल फोन एप्लिकेशन, आनलाइन ऑडियो और वीडियो जैसे यू-ट्यूब , पॉडकास्ट और ईबुक हैं। आधुनिक शिक्षा प्रणाली मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण को अपनाते हुए शिक्षा को छात्र केन्द्रित बनाती है|

प्राचीन और आधुनिक शिक्षा प्रणाली-:

A. **प्राचीन शिक्षा प्रणाली में स्कूल**प्राचीन शिक्षा प्रणाली में शिक्षा बहुत ही अनौपचारिक स्थान -: पर प्रदान कीजाती थीगुरु का घर हो सकते ,जो धार्मिक स्थल ,, या एक पेड़ के नीचे एक पार्क आदि ये गुरुकुल, मठ या मदरसे नाम से जाने जाते थेजो आज वर्त्तमान समय की शिक्षा | प्रणाली में प्रदान की जाने वाली सुविधाओं से वंचित होते थे। छात्र घरों से दूर यंही गुरुकुलों में शिक्षक के साथ रहकर शिक्षा प्राप्त करते थे गुरु के समीप रहते हुए विद्यार्थी उनके परिवार | |का सदस्य हो जाता था तथा गुरु उसके साथ पुत्रवत व्यवहार करता था

B. **प्राचीन शिक्षा प्रणाली में छात्र :-**प्राचीन शिक्षा प्रणाली में छात्रों से अपेक्षा की जाती थी कि वे अपने घर से निकलकर गुरुकुल में जाकर गुरु के सानिध्य में रहकर शिक्षा ग्रहण करेंऔर , |शिक्षा समाप्ति तक वहीँ उनकी सेवा करेंछात्र सादा जीवन एवं उच्च विचार का आदर्श सामने रखते तथा वे आत्मानुशासित व आत्मसंयम का गुण भी रखतेशुद्धता एवं सादगी उनके जीवन | | के मुख्य ध्येय थे

C. **प्राचीन शिक्षा प्रणाली में शिक्षक :-**प्राचीन शिक्षा प्रणाली में शिक्षक मूल रूप से धार्मिक विद्वान और विशेषज्ञ थे| जो वेदों और पुराणों के ज्ञाता होते थे , जो मुख्य रूप से कौशल युक्त शिक्षा प्रदान कर छात्र को जीवन के लिए तैयार करते थे |प्राचीन प्रणाली में शिक्षकों को गुरु के रूप में जाना जाता थाऔर छात्र उन्ही के निर्देशों का पालन करते थे ,| गुरु छात्र के बौधिक व् नैतिक दोनों प्रकार के आचरणों का विकास कार्य करते थे प्रतिदिन के जीवन में -दिन वह छात्र को | शिष्टाचार एवं सदाचार के नियमों का पालन करने के कौशल सिखाते तथा ध्यान रखते की छात्र उनका अनुसरण करें |

आधुनिक शिक्षा प्रणाली में स्कूल, छात्र और शिक्षक

A. **आधुनिक शिक्षा प्रणाली में स्कूल** :-आधुनिक शिक्षा प्रणाली में गुरुकुलों का स्थान कई ,एकड़ क्षेत्र में फैली बड़ी इमारतें और परिसर, छात्रावास, दवा सुविधाएँ, परिवहन हॉल और अन्य आवश्यक बुनियादी ढाँचो ने ले ली हैजहां छात्र को हर वो सुविधा उपलब्ध है जो उसके बहुमुखी विकास | |में सहायक है

B. **आधुनिक शिक्षा प्रणाली में छात्र -:**आधुनिक शिक्षा प्रणाली में मातापिता के लिए अपने बच्चों को -स्कूल भेजना एक अनिवार्य नागरिक दायित्व है फिर चाहे वह लड़का हो या लड़की | सभी छात्रों को अपने निवास स्थान से ही रोज स्कूल जाना आवश्यक है |छात्रों के स्कूल नामांकन को बढ़ाने तथा सभी को शिक्षित करने हेतु सरकार द्वारा कई योजनाए भी समय समय अपर बनाई गयी

हैं जैसे ७ से १४ साल तक के सभी बच्चों के लिए मुफ्त बुनियादी शिक्षाबेटी -बेटी पढाओ , बढाओजैसी पहल।

C. **आधुनिक शिक्षा प्रणाली में शिक्षक** :-शिक्षा प्रणाली में, शिक्षकों के लिए एक मानदंड तय किया गया है कि उन्हें कक्षा में छात्रों को पढ़ाने के लिए विशिष्ट डिग्री और अनुभव होना चाहिए। शिक्षकों को संरक्षक, शिक्षक और प्रोफेसर के रूप में जाना जाता है।

उपसंहार -: प्राचीन शिक्षा और आधुनिक शिक्षा के अलग-अलग मापदंड हैं- प्राचीन शिक्षा प्रणाली के समय गुरुकुल शिक्षण संस्थान थे। अब शिक्षण के लिए संस्थान कॉलेज जैसी औपचारिक संस्थाएँ हैं। प्राचीन शिक्षा प्रणाली उस समय संसार की श्रेष्ठतम शिक्षा प्रणाली थी किन्तु वर्तमान समय की मांग व सामाजिक स्वरूप के अनुरूप यह सिर्फ कुछ ही तत्वों पर ग्रहणीय है | जैसे गुरु शिष्यों का अनुशासित जीवन, उनके मधुर सम्बन्ध, व्यापक पाठ्यचर्या, नि:शुल्क शिक्षा आदि इन मुख्य तत्वों को ग्रहण कर हम वर्तमान शिक्षा प्रणाली को प्रभावी बना सकते हैं |

सन्दर्भ ग्रन्थ सूचि

Anonymous: https://www.getmyuni.com/articles/ancient-education-vs-modern-education, Ancient Education vs Modern Education - Which is Better?

Anonymous: http://ncert.nic.in>pdf>heih111. Ancient Education System of India.

Dev, K. (2018). Ancient and Morden education system in India: A comparative study. *Journal of Emerging Technology and Innovative Research*, 5(8).

Kapur, R. (2018). Education in the ancient period. *University of Delhi Research Gate*, 25.

Sharma, R., & Nemade, P. M. (2018). Changing faces of education system from ancient India to present digital education in India. *IOSR Journal of Engineering*, *8*(10).